2

कवि परिचय-2

संस्कृत साहित्य में महान कवि हैं उनका परिचय अत्यन्त आवश्यक है। हमें उनके देशकाल के विषय में भी जानना चाहिए, क्योंकि छात्रों द्वारा काव्य तो पढ़े जाते हैं। परन्तु काव्य के कर्त्ताओं के विषय में अपने ग्रन्थों में नहीं लिखते हैं। अतः अल्प प्रयास से उनका परिचय नहीं होता है। अतः 12वीं कक्षा के लिए यह पाठ व्यवस्थित किया है। सरल भाषा द्वारा विषय वर्णित किया है जिससे छात्रों को बोध हो जाये।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- कवियों के देशकालादि के विषय में जान पाने में;
- कवियों के ग्रन्थों को जान पाने में;
- साहित्य, कला को समस्त विकसित कर पाने में;
- प्राचीन और अर्वाचीन कवियों को जान पाने में;
- काव्य की शैली को समझ पाने में और;
- कवियों के महत्त्व को समझ पाने में।

2.1 कालिदास

संस्कृत साहित्य के अद्वितीय प्रतिभा के धनी कवि कालिदास हैं। संस्कृत जगत में ऐसा कोई

टिप्पणी

भी नहीं है। जिसके द्वारा प्रसिद्ध इन कालिदास का नाम नहीं सुना हो। कालिदास न केवल व्यक्ति के द्योतक हैं, अपितु प्राचीन भारतीय संस्कृति के स्वर्ण युग के भी द्योतक हैं। उस संस्कृत युग के मूर्त प्रतीक स्वरुप महाकवि कालिदास हैं, परन्तु दु:ख का विषय है कि प्राचीन साहित्य के विषय में जितनी स्पष्टता है उतनी स्पष्टता कालिदास के देशकाल और कृति के विषय में नहीं है। कुछ भी स्पष्ट प्रमाण नहीं प्राप्त होते। भारतवर्ष के किस नगरी में कालिदास का जन्म हुआ इस विषय में तो विवाद का अन्त ही नहीं है।

2.1.1 कालिदास

भारतीय कवियों का समय निर्धारण करना अतिकष्ट साध्य कार्य है। क्योंकि उनके द्वारा अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा। अन्य कृतियों में स्थित उल्लेखों के द्वारा अनुमान से प्राचीन कवियों का समय व्यवस्थित होता है। इस कारण से ही कालिदास के समय के सम्बन्ध में भी मत भेद है।

प्रथम मत–सर् विलियम जोन्स महोदय ने कालिदास का समय ई0पू0 प्रथम शताब्दी स्वीकार किया है, क्योंकि कालिदास विक्रमसंवत प्रवर्तक विक्रमादित्य राजा के सभापण्डित थे, ऐसा सुना जाता है अत: कालिदास का काल प्रथम शताब्दी है।

द्वितीय मत–बेवरलौसन्, याकोवि, मोनियर विलियम् इत्यादि महानुभावों के मतानुसार तो कालिदास द्वितीय शताब्दी के मध्य के हैं।

तृतीय मत–डा. भाऊदाजी महाशय ने कालिदास का समय छठी शताब्दी स्वीकार किया है। क्योंकि उज्जयिनी नरेश हर्षविक्रमगुप्त ने मातृगुप्त नामक व्यक्ति को काश्मीर का शासक नियुक्त किया था। यह मातृगुप्त ही कालिदास है ऐसा मानकर कालिदास का समय छठी शताब्दी मानते हैं।

चतुर्थ मत–वत्सभट्टि महोदय के एक शिलालेख से प्राप्त होता है। जहाँ 529 मालवा संवत्सर का उल्लेख है। उसे ही 476 ई0 कहा जाता है। उस शिलालेख की भाषा कालिदास की भाषा के समान दिखाई देती है। इसे आधार मान कर मैक्डोनल महोदय ने इनका समय पांचवीं शताब्दी कहा है।

पंचम मत–डॉ. हार्नले आदि विद्वानों ने कालिदास के काव्यों में गोप्ता, गोप्ते, कुमारगुप्त, स्कन्धआदि शब्दों से कालिदास का समय पञ्चमी व छठी शताब्दी के मध्य स्वीकार किया, क्योंकि इस प्रकार के शब्दों से गुप्तवंशीय राजाओं का स्मरण होता है।

षष्ठ मत–ए0सी0 चटर्जी तो कालिदास को मालवराज शोधधर्म के समकालीन मानकर उनका समय छठी शताब्दी मानते हैं।

सप्तम मत–रामचन्द्र विनायकपटवर्धन ने तो ''आषाढस्य प्रथम दिवसे, प्रत्यासन्ने नमसि'' इत्यादि श्लोकांश के आधर से कालिदास का समय 1800 वर्ष पूर्व कहा है क्योंकि ज्योतिष अनुसार गणना करके भी यही निर्णय होता है।

अष्टम मत–आर कृष्णमाचारियर् महाशय ने ''दिङ्नागाना पथि परिहरन्'' इस श्लोक के आधार से दिङ्नाग के समकालीन स्वीकार करते है। दिङ्नाग का समय छठी शताब्दी था। इस कारण कालिदास का भी समय छठी शताब्दी है।

नवम मत–म.म. रामावतारशर्मा ने चन्द्रगुप्त द्वितीय के समकालीन स्वीकार करके उनका समय छठी शताब्दी कहा है। किन्तु कुछ विचारक तो कालिदास ईस्वी पूर्व द्वितीय शताब्दी में हुए थे, ऐसा समर्थन करते हैं।

2.1.2 कालिदास का देश

कालिदास के जीवनवृति के विषय में अनेक लोकश्रुति और वाद हैं। कुछ इनको विक्रमादित्य की सभा में कवि मानते हैं और कुछ गुप्तकालीन राजा के आश्रित कहते हैं। धारानगर में राजा भोज की सभा में कविरत्न के पदवी से सुशोभित थे ऐसा कथाविद् कहते हैं। जनश्रुति के अनुसार ये बाल्यकाल से ही अतीव मूर्ख थे। विद्योत्मा के साथ इनका विवाह हुआ। पति मूर्ख है ऐसा जानकर विद्योत्मा कालिदास को कालीदेवी के मन्दिर में ले गई। 'जब तक आपको विद्या का उपदेश नहीं देती है तब तक आप को वहां से बाहर नहीं आना चाहिए'' ऐसा आदेश दिया। तब से पत्नी के आदेशानुसार वैसा ही आचरण कर कालिदास कालीदेवी के वरदान से विद्वान हो गये। यह कथा कालिदास की प्रतिभा और कविता चातुर्य को प्रकट करती है। परन्तु ऐसा विद्वान नहीं मानते। इस प्रकार की कालिदास के कविता चातुर्य को दिखाने वाली अनेक कथाएँ हैं।

प्रथम–उत्तररामचरित के कर्त्ताभवभूति ने स्वंय नाटक लिखकर कालिदास के अभिप्राय को पूछा था। वह नाटक के प्रथम अंक में विद्यमान है।

किमपि किमपि मन्दं मन्दमासत्तियोगादविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण।
अशिथिलपरिरम्भव्यापृतेकैकदोष्णोरविदितगतयामा रात्रिरेवं व्यरंसीत्॥

इस श्लोक में ''रात्रिरेवम्'' का ''रात्रिरेव'' कहकर सूक्त का परिष्कार किया। इस लिखित श्लोक में जैसा रसमयार्थ था वैसा ही परिष्कर किया। यहाँ कालिदास की काव्यप्रतिभा की सहृदयों ने प्रशंसा की, परन्तु भवभूति और कालिदास समकालीन थे यह इतिहासकारों द्वारा स्वीकार नहीं हैं।

द्वितीय मत– एक दूसरी कथा भी सुनी जाती है। किसी समय सरस्वती देवी ने कालिदास एवं भवभूति के कवितागुणतारतम्य की परीक्षा के लिए तुला में दो स्थालियों में दोनों को स्थापित किया। तब भवभूति की स्थाली का भार न्यून (कम) रहा। सरस्वती ने कुल्हारमुकुल मकरन्द को अपने कानों में लगाया जिससे दोनों स्थाली समान हो गई, ऐसा सुना जाता है। कालिदास के कविता चातुर्य को भोजप्रबन्ध कृति में अनेक परिश्लाघ्य उपाख्यानों से दिखाया है। परन्तु ये सभी प्रमाण स्वरूप नहीं कहे जा सकते।

तृतीय मत– विक्रमसंवत्सर संस्थापक विक्रमादित्य के आख्यान में वर्णित नवरत्नों में कालिदास अद्वितीय थे। यह दूसरा परम्परागत विश्वास है जैसा–

टिप्पणी

धन्वन्तरि क्षपणकामरसिहं शंकुवैतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः।
ख्याती वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानिवै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

इस श्लोक में नवरत्नों के नाम निर्दिष्ट है। परन्तु ये सभी समकालीन नहीं है। कालिदास विक्रम के आख्यानों में थे, यह अंश स्वीकार किया जाये तो भी, यह श्लोक उनके काल को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इस प्रकार की प्रचलित किंवदन्ती अथवा ऐतिहासिक व्यक्तियों द्वारा उल्लेखित कथा भी कालिदास के चरित्र को बताने में समर्थ नहीं है। जो कथा रम्य हैं उनसे कालिदास की जनप्रियता जानने में समर्थ है। महाकवि ने कब और किस देश में जन्म ग्रहण किया इस विषय में सभी अनुसन्धानों का एक ही निष्कर्ष है। अद्यावधि इनके जीवन के विषय में बाह्य दन्तकथा और ऐतिहासिक कथाएँ है। मेघदूत व अन्य कृतियों में बार बार उज्जयिनी के सौन्दर्य का वर्णन किया, अतः वे वहाँ बहुत काल तक रहे होंगे। काश्मीर में प्रवर्धित केसर पुष्प का वर्णन किया, इससे ये काश्मीरी हैं। ऐसा कुछ विद्वानों का अभिप्राय है। उनके द्वारा मेघदूत में निर्दिष्ट रामगिरि और विदर्भ भी है। इस प्रकार के वर्णन से विदर्भीय थे यह निर्णय समीचीन नहीं लगते। मालवा का विस्तार से वर्णन किया इससे वे मालवीय है, ऐसा कुछ का अभिप्राय है। रघुवंशमहाकाव्य में वर्णित रघु की दिग्विजयों का सूक्ष्मता से परिशीलन करने पर पता लगता है कि उनका भारत में कोई भी प्रदेश अपरिचित नहीं है। जैसा असम प्रदेश का वर्णन किया, वैसी ही मनोहर शैली में केरल का भी वर्णन किया है। हिमालय के समान समुद्रतीर का सुन्दर वर्णन किया। अतः वे राष्ट्रकवि हैं, उज्जयिनी उनका स्थिर स्थान है, समग्र भारत उनका चरस्थान है, इसलिए समग्र भारत ही उनका प्रदेश है, ऐसा कह सकते है। इनके माता-पिता का नाम आज भी उपलब्ध नहीं है। इनके काव्य एवं नाटकों में समुद्र से भू स्थानों का वर्णन है। इनका देश काश्मीर है, बंगाल है, मालव है, या इनसे भिन्न है। ऐसा विद्वानों द्वारा वाद-मण्डित है। यद्यपि इन तीन समालोचक परम्पराओं से कालिदास जाने जाते हैं। संस्कृत साहित्य परिचितों के मन से कालिदास अन्यतम है। कालिदास के तीन काव्य और तीन नाटक जगत को मोहित करते हैं और पाश्चात्य् विद्वानों के मन को हठ से छोड़ते हैं।

2.1.3 कालिदास की कृतियाँ

कालिदास की कितनी कृतियाँ हैं इन विषय में भी मतभेद है। फिर भी बहुत से विद्वानों के मतानुसार कालिदास की सात कृतियाँ हैं। दो महाकाव्य-रघुवंशम् और कुमारसम्भव। दो खण्ड काव्य- ऋतुसंहार एवं मेघदूत। तीन नाटक- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, और विक्रमोर्वशीयम्। कुछ विद्वान् इन ग्रन्थों के अतिरिक्त भी पुष्पवाणविलास, श्रृंगाररसाष्टक, नलोदय आदि ग्रन्थ कालिदास के मानते हैं। परन्तु अन्य विद्वानों के मतानुसार इन ग्रन्थों के लेखक कालिदास नहीं है।

ऋतुसंहार

ऋतुसंहार कालिदास के खण्डकाव्य में एक अद्वितीय रचना है। ऋतुसंहार में छः सर्ग हैं। इस ग्रन्थ में एक सौ बावन (152) श्लोक हैं। ग्रीष्म ऋतु से वसन्तऋतु तक छः ऋतुओं का वर्णन प्राप्त होता है। समय के परिवर्तन से प्रकृति कैसे परिवर्तित होती है। उसका चित्रण इसमें प्राप्त

होता है। यहाँ विशेषत: प्रकृति के परिवर्तन से मनुष्यों का भोगोपकरण वर्णित हैं। इस काव्य में चित्रधर्मिता, गीतिधर्मिता रुप वैशिष्ट्य देखा जाता है, परन्तु ऋतुसंहार कालिदास का ही ग्रन्थ है इस विषय में भी मतभेद देखा जाता है। कवि के द्वारा ऋतुसंहार में विभिन्न ऋतुओं में युवक युवतियों के सम्भोग का वर्णन किया गया है। बहुत से लोग सरल रचनावश ऋतुसंहार को कालिदास की रचना ही नहीं मानते और कुछ लोग इसे कालिदास की युवा अवस्था की रचना कहते हैं।

मेघदूत

मेघदूत कालिदास के रचनासमूह के मध्य जनप्रिय काव्य है। यह ग्रन्थ मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखित है। नायक धीरललित यक्ष एवं विशालाक्षी यक्षिणी नायिका है। इस ग्रन्थ में दो मेघ हैं पूर्वमेघ और उत्तरमेघ। कर्त्तव्य के प्रमाद के कारण यक्ष कुबेर के आदेश से पत्नी को छोडकर रामगिरि पर्वत पर रहता है। वर्षाकाल में प्रिया के विरह में स्थित यक्ष की वियोग अवस्था का वर्णन है। मनुष्य काम पीड़ित होकर कैसे आचरण करते हैं, उसका वर्णन दिखाया गया है। यहाँ पर कवि ने पहली बार जड़ पदार्थ को स्वीकार करके दूत रुप से प्रदर्शित किया है। कवि द्वारा प्रिया विहीन व्यक्तियों की अवस्था का वर्णन किया गया है। यहाँ श्लोक पढने से ही प्रकृति का चित्र स्पष्ट प्रतिभाषित होता है।

रघुवंशम्

रघुवंश 19 सर्गात्मक महाकाव्य है। इसमें रघुवंश की कथा निबद्ध है। रघु अत्यन्त पराक्रमी और दानवीर था। इस काव्य में उसके वंश का गुणवर्णन है। इसी कारण कवि ने यह रघुवंश नामकरण किया। प्रधानतया इसमें दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम, लव, अतिथि, इत्यादि श्रेष्ठ राजाओं का वर्णन है। दिलीप सत्यसिन्धु, रघु पराक्रमी और दानशील, अज कोमल हृदय और प्रेमी, श्रीराम सर्वोत्तम इस प्रकार ये चारों भी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के प्रतीक हैं। इस काव्य में रघु दिग्विजय, अजविलाप, सीतापरित्याग आदि भाग चित्ताकर्षक है। दसवें सर्ग में रामायण का सारसर्वस्व निरुपण किया गया। प्रत्येक सर्ग में कुछ अंश आकर्षक हैं। कथा भाग और वर्णन परस्पर मिलकर इस काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। रसों की परिपक्वता तन्मयता को पैदा करती है। नवरत्न विराजित मुक्ताहार के समान सर्वविध सौन्दर्य युक्त सत् सहृदयों की प्रीति पात्रता का आह्वान करती है। कालिदास द्वारा अन्य काव्यनाटकों की रचना की, फिर भी संस्कृत ग्रन्थकारों ने उनको रघुकवि कहकर प्रशंसा की। इसलिए इस काव्य की उत्कृष्टता समझी जाती है। दसवें सर्ग के आरम्भ से पन्द्रहवें सर्ग तक राम की कथा वर्णित है। इसके बाद रामवंशीय राजाओं के चरित को उपस्थापित किया। अन्तिम सर्ग गर्भान्ध अग्निवर्ण के अभिषेक से समाप्त होता है। कालिदास अग्निवर्ण के परवर्ती राजाओं का भी वर्णन करना चाहते थे, किन्तु वे कालकवलित हो गये। बहुत से लोग कहते हैं कि कालिदास के द्वारा रघुवंश के आगे के सर्ग भी लिखे गये थे, परन्तु वे आज प्राप्त नहीं होते। बहुत से लोग तो कालिदास और अग्निवर्ण की समकालिकता से ग्रन्थ की तत्पर्यन्ता का समर्थन करते हैं। रघुवंश में जिन राजाओं का वर्णन है उनका रामायण वर्णित राजाओं के साथ भेद मिलता है। परन्तु वायुपुराण वर्णित वंशावली के साथ रघुवंश वर्णित वंशावली बहुत अधिक सामंजस्य को धारण करती है। दसवें

टिप्पणी

सर्ग के आरम्भ से पन्द्रहवें सर्ग तक राम की कथा वर्णित है। उसके बाद रामवंशीय राजाओं का चरित को उपस्थापित किया। रामायण से रामकथा के आश्रय से महाकविकालिदास ने रघुवंश महाकाव्य की रचना की। संस्कृत साहित्य जगत में रघुवंश महाकाव्य अत्यधिक जनप्रिय रचना है।

कुमारसंभवम् महाकाव्य

कुमारसंभव दूसरा महाकाव्य है। शिव-पार्वती के प्रेम वर्णन के साथ देवसेनापति कुमारस्कन्ध के जन्मवर्णन से युक्त यह अद्वितीय महाकाव्य है। इसमें 17 सर्ग हैं। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार इसमें पूर्व में 22 सर्ग रहे होंगे। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के वरदान से तारकासुर अत्यधिक बलवान होकर सम्पूर्ण देवों को पीडित करने लगा। इस कारण से ब्रह्मा की सूचना के अनुसार देवों ने शिव-पार्वती का विवाह करवाया। उनके पुत्र कुमार द्वारा तारकासुर मारा गया। यह कथा कवि द्वारा सुमधुर शैली में वर्णित है।

रामायण के नीचे लिखे पद्य को पढ़कर ही कालिदास ने अपने काव्य का नामकरण किया ऐसा कुछ विद्वानों का तर्क है।

एष ते राम गंगायाः विस्तारोऽभिहितो मया।
कुमारसंभवश्चैव धन्यःपुण्यस्तथैव च। बालकाण्ड 7/32

काव्य के आरम्भ में कवि ने नगाधिराज हिमालय पृथिवी के मानदण्ड के समान स्थित है इस प्रकार का मनोहर रुप से वर्णन किया। इस काव्य में रतिविलास, वसन्तवर्णन एवं पार्वती की तपस्या का अपूर्व वर्णन है। यह काव्य कवि की प्रतिमा की पराकाण्ठा है। काव्य की भाषा, काव्य चारुत्व उन्नत संस्कृति का परिसर सुन्दर उपमान निदर्शना आदि काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं।

कुमारसंभव काव्य में तपस्या में तत्पर हिमनगसुता पार्वती ने ब्रह्मचारी वेशधारी शिव के सम्भाषण को सुनकर वहां से जाने के लिए इच्छा की, तब अनल्पकल्पनामूर्ति कवि कालिदास ने सर्वथा नवीन और मर्मस्पर्शी उपमा प्रस्तुत की। यथा

शिलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ।
मार्गाचलव्यतिकराऽऽकुलितेव सिन्धुः॥

यहां मार्गाचलव्यतिकर से आकुलिता नदी के समान शिलाधि तनया पार्वती से की है। पार्वती की उचित शारीरिक एवं मानसिक स्थिति इस पद्यांश से सम्यक् परिलक्षित होती है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक ने तो कालिदास के नाम को संस्कृत जगत में सबसे ऊपर स्थापित किया है। संस्कृत साहित्य में शाकुन्तल के समान नाटक नहीं है। प्रायः भारतवर्ष में सभी भाषाओं में इस नाटक का अनुवाद हुआ। सभी जगह इस नाटक का प्रदर्शन होता है। लोक श्रुति भी है कि ''नाटकेषु रम्यं शाकुन्तलम्''। शाकुन्तल नाटक में सात अंक है और भी शाकुन्तल के चतुर्थ अंक को एकान्त एवं मनोज्ञरुप से पठन किया जाये तो ज्ञात होता है कि तात्कालिक सामाजिक गौरव कितना था।

टिप्पणी

विक्रमोर्वशीयम्

इस नाटक में उर्वशी एवं पुरुरवा की प्रेमकथा वर्णित है। संस्कृतसाहित्य में यह कथा अति प्राचीन और जनप्रिय थी। ऋग्वेद के संवाद सूक्त में यह घटना प्राप्त होती है। इस घटना को आधार करके ही यह नाटक रचा गया। अभिशाप के कारण उर्वशी स्वर्ग से मृत्यु लोक आयी। मृत्यु लोक में आगमन से राजा पुरुरवा के साथ उसका मेल हुआ। उसके बाद दोनों का प्रणय आरम्भ हुआ। परन्तु अभिशाप के अन्त में उर्वशी पुरुरवा को त्यागकर स्वर्ग चली गई। विरह के कारण पुरुरवा उन्मत्त पागल सा हो गया। इन्द्र ने दोनों के प्रेम को देखकर उर्वशी को फिर पुरुरवा के साथ रहने की अनुमति दे दी।

मालविकाग्निमित्रम्

पाँच अंकों वाला यह नाटक विदिशा नरेश अग्निमित्र और मालविका की प्रेमकथा को आधार बनाकर लिखा गया था। यह नाटक अतीव रोमांचक है।

2.1.4 कालिदास की भाषाशैली

रस सिद्ध इस कवीश्वर की महिमा उसके काव्यों से ही ज्ञात होती है। कालिदास के काव्यों के परिशीलन से ज्ञात होता है कि उनका वेदशास्त्र एवं पुराणों में अगाध पाण्डित्य था, ऐसा कल्पना चातुर्य, पदों का माधुर्य, पात्र संविधान निपुणता, रसोल्लास, ललित मनोहारी वचन आदि सभी गुणों से इस कवि के काव्य सर्वजन आदरणीय है। सुधिजनों द्वारा पुरस्कृत कालिदास भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि कवि है। सरस अन्तकरण सहृदयों द्वारा इनकी रचना चर्तुवर्ग पुरुषार्थों की प्रधान साधनस्वरुप स्वीकृत की गई। ये महाकवि वैदर्भी रीति के सम्राट, प्रसाद गुण परिपूर्ण, उपमा प्रयोग के गुरु, प्रकृति चित्रण के चित्रकार व्यंजना प्रयोग शैली, नवीन कल्पना में कुशल अद्वितीय काव्य शिल्पी के रुप में सुशोभित हैं। कवियों में सूर्य के समान कालिदास विराजमान है। कालिदास की भाषा दोष रहित सरल है। बिना प्रयास साहित्य की सरल भाषा से तत्वों का उपदेश देते हैं। इसी कारण से कालिदास के काव्य अतीव लोकप्रियता को प्राप्त हुए। कालिदास की रचना न केवल विद्वानों को अपितु बालकों को भी रुचिकर लगती है। जैसा कि रघुवंशम् में दिखाई देता है।

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघविपर्ययः।
गुणागुणान्बन्धित्वात् तस्य सप्रसवाइवः॥

कालिदास की काव्यमाधुरी प्रसिद्ध है। समालोचकों की सम्मति में कलापक्ष की अपेक्षा हृदय पक्ष का चमत्कारी उपन्यास कालिदास के काव्यों में संभव हुआ है। वे श्रेष्ठ कवि हैं। अनुकूल हृदय पक्ष का चमत्कारी चित्रण कालिदास के काव्यों में सर्वत्र देखने को मिलता है। मानव जीवन के सर्वांग सम्पूर्ण चित्र उपस्थित करने के लिए इन्होंने रघुवंश की रचना की। प्रेम के श्रेष्ठ प्रकर्ष को प्रकाशित करने के लिए कुमार संभव का निर्माण किया।

टिप्पणी

अलंकारी योजना

''उपमा कालिदासस्य'' यद्यपि यह उक्ति संस्कृत जगत में सर्वत्र प्रचलित है। कालिदास ना केवल उपमा के प्रयोग में शूरवीर थे अपितु सभी अलंकारो का प्रयोग कालिदास ने किया है। उपमालंकार का प्रयोग बार-बार देखने को मिलता है। जैसा प्रयोग कालिदास ने किया वैसा अन्य कोई करने में समर्थ नहीं है।

पाठगत प्रश्न-2.1

1. कालिदास के कितने काव्य हैं?
2. कालिदास का समय क्या है?
3. कालिदास के कितने नाटक हैं?
4. कालिदास किस अलंकार के वर्णन में शूरवीर थे?
5. रघुवंश में कितने सर्ग हैं?
6. रघुवंश में किन राजाओं का वर्णन हैं?
7. कुमारसंभव में कितने सर्ग हैं?
8. कुमारसंभव में कुमार कौन हैं?
9. कुमारसंभव के नायक कौन हैं?
10. कालिदास के देश कहाँ-कहाँ हैं?

2.2 अश्वघोष

अश्वघोष संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध महाकवि है। साकेत नगर इनका जन्म स्थान है। साकेत नगर वर्तमान का अयोध्या नगर है। ये आर्यसुवर्णाक्षी के पुत्र थे। विद्वानों ने इनका समय ईसवीं प्रथम शताब्दी स्वीकार किया है। ये सम्राट कनिष्क के समकालीन थे। अश्वघोष कनिष्क के राजा के गुरु थे। जन्म से ब्राह्मण वेदशास्त्रों में निष्णात प्रतिवादि भयंकर महापण्डित थे। कुछ समय पश्चात् अश्वघोष बुद्ध के उपदेशों से आकृष्ट हुए और महायान शाखा में आसक्ति रखने वाले बुद्धसंघ के अध्यक्ष वसुमित्र से बौद्धदीक्षा प्राप्त करके बौद्धमत को स्वीकार किया। ये संगीत में पारंगत थे। इनके गायन के समय में अश्व भी गानमुग्ध होकर तृण आदि का सेवन नहीं करते थे। इसी कारण इनका नाम 'अश्वघोष' पड़ा।

अश्वघोष सुवर्णाक्षीपुत्र पार्श्व के शिष्य कहे जाते हैं। वे मगधराज आश्रित थे। उत्तरभारत के शासक कनिष्क ने मगधराज को आक्रमण से झुकाकर राज्य के बदले में दो वस्तुओं को देने का आदेश दिया। 1. बुद्ध के पात्र, 2. अश्वघोष। राजा मगधों के पात्र को देने के लिये तैयार

था किन्तु अश्वघोष नहीं देना चाहता था। मन्त्रिगण उसको देखकर चिन्ताग्रस्त हो गये। राजा ने मन्त्रियों को समझाने के लिए एक उपाय किया। वह अपनी घुड़साल में स्थित अश्वों के लिए एक दिन ग्रासदान का सेवन कराया। दिनान्तरे सभी घोड़ों के सामने ग्रास देकर अश्वघोष को अपना संगीत बजाने के लिए कहा। तब वे अश्वघोष के संगीत को सुनने के लिए इच्छित थे ग्रास खाने के लिए नहीं। तब कवि अश्वघोष के मूल्य को जाना। इसलिए ही उनका नाम अश्वघोष हुआ। इनका वास्तविक नाम लुप्त हो गया। अश्वघोष कनिष्ठ के साथ काश्मीर चले गये। वे उनको बहुत अधिक आदर देते थे। कनिष्क के समकालीन होने से अश्वघोष का समय ईसवी पूर्व प्रथम शताब्दी निर्णित होता है। अश्वघोष के काव्य का चीनी भाषा में 248-417 ई0 अनुवाद किया गया। इत्सिंग नाम के चीनी यात्री ने महा उपदेशक अश्वघोष को नागार्जुन से पूर्ववर्ती कहा था। अश्वघोष साकेत निवासी थे।

2.2.1 काल

अश्वघोष कालिदास कवि के पूर्व कवि है। यह सुना जाता है कि शताब्दी प्रथम शतक के राजा कनिष्क के समकालीन थे। अत: कनिष्क का काल ही अश्वघोष का काल माना जाता है। अत: अश्वघोष का काल ई0पू0 प्रथम शतक है।

2.2.2 देश

अश्वघोष महाराजा कनिष्क के सभापति थे। उनका देश मगध था और अश्वघोष का जन्म स्थान साकेत था।

2.2.3 कृतियाँ

महाकवि अश्वघोष दार्शनिक पण्डित और धर्म प्रवक्ता के रुप में प्रसिद्ध थे विभिन्न शास्त्रों में उनका पाण्डित्य था। यहाँ कवि अश्वघोष ने बुद्धचरितम्, सौन्दरनन्दम्, शारिपुत्रप्रकरणम्, गाण्डीस्तोत्रगाथा, वज्रसूची और सूत्रालंकार ग्रन्थों की रचना की।

बुद्धचरितम्- बुद्धचरितम् अश्वघोष का काव्य है। इस काव्य में 17 सर्ग उपलब्ध होते हैं। चीनी प्रो0 तककुसुमहाशय के ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि उस ग्रन्थ में तीन हजार श्लोक थे। किन्तु आज इस काव्य में केवल 1368 श्लोक प्राप्त होते हैं। सातवीं या आठवीं शताब्दी में इसके चीनी भाषा में अनुवादित बुद्धचरित में 28 सर्ग है। इससे प्रतीत होता है कि संस्कृत भाषा में बुद्धचरित का भाग मात्र ही प्राप्त होता है। राजा शुद्धोधन कपिलवस्तु नाम के नगर में राज्य करते थे। उनका पुत्र सिद्धार्थ युवराज था। समृद्ध राज्यवान प्रवृद्ध अधिकारवान्, सौन्दर्यवती और प्रिय पत्नी यशोधरा के साथ स्वर्गसमान सुखमय जीवन जीने वाले सिद्धार्थ को कैसे वैराग्य उत्पन्न हो गया, इस कथा को बुद्धचरित में वर्णित किया गया है। इसमें महात्मा बुद्ध के सम्पूर्ण जीवन की कथा निबद्ध है जैसे कि अभिनिष्क्रमण, तपोवन गमन, यशोधरा विलाप, मगध यात्रा वर्णन, सिद्धार्थ को बुद्धत्व की प्राप्ति, धर्मप्रचार शिक्षाप्रसार, इत्यादि विषयों का सरल व

टिप्पणी

भावपरिपूर्ण भाषा से वर्णित है। काव्य में बौद्धमत के पारिभाषित शब्दों की बहुलता विद्यमान है। बुद्धचरित से बोध होता है कि अश्वघोष बौद्धमत के महायान परम्परा के प्रवर्तक हैं।

कविता हृदयगत भावना की उद्‌बोधक होती है। कविता मानव हृदय को उत्तेजित व आकर्षित करती है। अत: प्राचीन काल से ही मानव धर्म एवं अपने उद्‌देश्य के प्रचार के लिए कविता का आश्रय ग्रहण किया जाता है। महाकवि अश्वघोष ने भी बौद्धधर्म के प्रचार के लिए काव्य की रचना की। सौन्दरनन्द के अन्त में कवि ने स्वयं कहा कि जैसे तिक्त औषधि को पीने के लिए मधु का मेल किया जाता है। वैसे ही मैंने धर्मप्रचार के लिए काव्य का आश्रय ग्रहण किया है।

अतएव अश्वघोष के काव्य बौद्धधर्म के दार्शनिक विचारों की प्रचारिका है। अश्वघोष प्रकाण्ड विद्वान थे इस में कोई संशय नहीं है। ये कवि बौद्ध दर्शन व बौद्ध सिद्धान्तों के आचार्य थे। इनके प्रामाणिक ग्रन्थ बुद्धचरितम्, सौन्दरनन्द और शारिपुत्रप्रकरण है। अन्य ग्रन्थ अन्त: और बाह्य प्रमाणों से इनके द्वारा रचित प्रतीत नहीं होते। काव्य में कुछ अंश सरस, काव्यकला की दृष्टि से उत्तम हैं। शेष नीरस ही हैं।

सौन्दर नन्द

इस काव्य में 18 सर्ग है। इसमें इक्ष्वाकु वंश के राजा नन्द की धर्मपत्नी सुन्दरी के साथ प्रणय कथा वर्णित है। इसमें जब सुन्दरी के विरह में नन्द मरणासन्न हो जाता है, तब गौतम बुद्ध ने उस नन्द को उपदेश दिया वह उपदेश बहुत तात्पर्यपूर्ण था। काव्योत्कर्ष की दृष्टि से तो सौन्दरनन्द बुद्धचरित से श्रेष्ठ है। यहां कवि ने सम्पूर्ण कलाकौशल एवं काव्यवैभव को प्रदर्शित किया।

शारिपुत्र प्रकरण

शारिपुत्र प्रकरण को अश्वघोष का प्राचीन नाटक कहा जाता है। परन्तु इस विषय में मतभेद है। अधिकांश के मत में शारिपुत्रप्रकरण अश्वघोष की कृति नहीं है परन्तु रचना शैली की दृष्टि से कुछ लोग इसे अश्वघोष का मानते हैं। इस नाटक में 9 अंक है। इस का नायक धीरोदत्त स्वभाव का है।

सूत्रालंकार

बौद्धदर्शन शिक्षण पर आधारित इस ग्रन्थ का केवल तिब्बती भाषा में अनुवाद है। मूल स्वरुप में उपलब्ध नहीं है। इसमें नैतिक विचार को उन्नयन करने वाली कुछ कथाऐं संग्रहीत है।

वज्रसूची

यह ग्रन्थ बौद्धधर्म के आख्यानों पर आधरित है। इस में वर्ण व्यवस्था पद्धति को दिखाया गया है। कुछ लोग इस काव्य को धर्मकीर्ति का कहते है, न कि अश्वघोष का।

महायानश्रद्धोत्पादकशास्त्रम्-

इस शास्त्र में शून्यवाद का विवेचन है। इसका भी मौलिक रूप उपलब्ध नहीं होता, चीनी भाषा में इसका अनुवाद है।

2.2.4 अश्वघोष का पाण्डित्य

अश्वघोष का साहित्यिक पाण्डित्य व बौद्धदर्शन का ज्ञान अतीव गम्भीर था। वे दार्शनिक तथ्यों को सरल सरस शैली में उपस्थापित करते हैं। अश्वघोष शुरु में ब्राह्मण थे। अतः ब्राह्मण साहित्य का भी प्रगाढ़ ज्ञान था और नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और व्याकरण शास्त्र के विषय में भी सम्यक् ज्ञान था। ये योगाचार मत के संस्थापक थे।

पाठगतप्रश्न-2.2

11. अश्वघोष किस राजा के पास थे?
12. अश्वघोष के कितने काव्य हैं?
13. अश्वघोष रचित नाटक कौन सा है?
14. अश्वघोष का काल क्या है?
15. बुद्धचरित में कितने सर्ग हैं?
16. बुद्धचरित में नायक कौन है?
17. बुद्ध के पिता कौन थे?
18. सौन्दरनन्द काव्य किसकी कृति है?
19. सौन्दरनन्द में कितने सर्ग हैं?
20. वज्रसूची किसकी कृति है?
21. शारिपुत्रप्रकरण किसकी रचना है?

2.3 भारवि

2.3.1 भूमिका

भारवि शैवमतावलम्बी, प्रकाण्ड पण्डित, राजनीतिज्ञ, वीररस वर्णन कुशल, अलंकृत शैली के प्रवर्तक थे। भारवि के द्वारा अपने परिवार, निवास स्थान, पिता, पितामह, अथवा गुरु के विषय

टिप्पणी

में कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया। भारवि दण्डि विरचित अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार कुशिक गोत्रीय ब्राह्मण थे। वे आनंदपुर में निवास करते थे। उसके बाद उन्होंने वरार प्रान्त के अचनपुर एलिपुर में आकर निवास किया। इस वंश में नारायण स्वामी हुए। इनके पुत्र दामोदर थे। ये दामोदर ही भारवि के नाम से प्रख्यात हो गये। वहां भारवि के विषय में यह श्लोक प्राप्त होता है-

स मेधवी कविर्विद्वान् भारविं प्रभवां गिराम्।
अनुरुधयाकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

इस प्रकार भारवि दण्डि के प्रपितामह थे। उनका स्थितिकाल 600 ई0 के समीप माना जाता है। इनका ''किरातार्जुनीयम्'' नामक एक ही महाकाव्य प्राप्त होता है जो बृहत्रयी में प्रथम स्थान पर परिगणित है। संस्कृत विद्वत्समाज में 'भारवेरर्थगौरवम्', 'नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवे:' ''स्पुटता न पदैरपाकृतां'' इस प्रकार के आख्यान सुप्रसिद्ध हैं। महाकवि भारवि कृत किरातार्जुनीय महाकाव्य में वर्णित भौगोलिक वर्णन के अनुसार उनके देशकाल के विषय में ज्ञान करना चाहिए।

2.3.2 देश एवं काल

भारवि के देश काल के विषय में विविध मत नीचे उपस्थित हैं।

प्रथम- दक्षिण भारत में होलग्राम में 634 ई0 में जैन कवि रवि कीर्ति द्वारा लिखित शिलालेख में ''स विजयतां रविकीर्ति: कविताश्रित कालिदास भारविकीर्ति:'' इस उल्लेखित पंक्ति से ज्ञात होता है कि सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक भारवि सुविख्यात कवि थे।

द्वितीय- काव्य कला के उत्तरोत्तर प्रभाव की दृष्टि से कालिदास भारवि के पूर्ववर्ती तथा महाकवि माघ उत्तरवर्ती थे। माघ का काल 700 ई- माना जाता है। अत: भारवि का स्थिति काल 6 वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध होना चाहिए।

तृतीय-काशिका में भारवि का (किरात 3/14) यह उदाहरण प्राप्त होता है। अत: भारवि का समय वामनजयादित्य (7 वीं शताब्दी पूर्व) के बाद 6वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध होना चाहिए।

चतुर्थ-अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार दण्डी के पितामह दामोदर एवं भारवि विष्णुवर्धन के (615ई.) सभापण्डित थे। अत: उनका काल 6 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में होना चाहिए। निष्कर्ष रूप से प्रतीत होता है कि भारवि का स्थितिकाल 6 वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध सप्तम शताब्दी पूर्व (550-600ई.) होना चाहिए।

2.3.3 कृति-किरातार्जुनीयम् -

महाकवि भारवि ने महाभारत कथा का आश्रय लेकर अलंकृत कलापक्ष प्रधान शैली से 18 सर्गों वाले वीररस प्रधान किरातार्जुनीय महाकाव्य की रचना की। अर्थगाम्भीर्य से युक्त किरातार्जुनीय बृहत्त्रयी में प्रथम परिगणित है। इस ग्रन्थ का शुभारम्भ श्री शब्द से तथा सर्गान्त लक्ष्मी शब्द

से होता है। इस में अर्जुन का किरातवेशधारी शिव के साथ युद्ध का वर्णन है। अतएव ग्रन्थ का नामकरण किरातार्जुनीयम् किया। ''किराताश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ (द्वन्द्व) किरातार्जुनौ अधिकृत्य कृतं काव्यं किरातार्जुनीयम्'' किरातार्जुन+छ (ईय आदेश:) होकर किरातार्जुनीयम्। अर्जुन के लिए दिव्यास्त्रों की प्राप्ति ही महाकाव्य का फल है। इस ग्रन्थ का नायक अर्जुन और नायिका द्रौपदी है। अर्थगौरव, स्पष्टता, पुनरूक्तेरभाव और अलंकृतशब्द योजना इस महाकाव्य का वैशिष्ट्य है। भारवि के द्वारा एकाक्षर, द्वयक्षर वाले श्लोकों की भी रचना की। जैसे ''न नोनन्नुनो नाना नानानता ननु'' (किरात. 15/14)। इस ग्रन्थ में ऋतु वर्णन, हिमालय वर्णन, सन्ध्यावर्णन, चन्द्रवर्णन एवं प्रभात आदि का रोचक एवं रमणीय चित्रण विद्यमान है। इसी प्रकार 15 वें सर्ग में चित्रकाव्य का वर्णन देखने योग्य है। प्रथम सर्ग में द्रोपदी के कथन में वचन चातुर्य विद्यमान है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। किरातार्जुनीय के कथानक का मूलाधार महाभारत ही है। महाभारत के 18 वें सर्ग व वनपर्व में किरातार्जुनीय की कथा है। यहाँ किरात वेशधरी शिव है। महाभारत से संक्षिप्त कथानक लेकर भारवि ने अपनी कल्पनाकाव्य प्रतिभा से कथानक में मौलिकता उत्पन्न की। महाभारत की शैली सरल है, किन्तु किरातार्जुनीय की शैली क्लिष्ट व अलंकृत है। महाकाव्य के लक्षणानुरोध से भारवि ने ऋतु, पर्वत, नदी, वन, प्रात:, सन्ध्या आदि का भी सुन्दर वर्णन किया है। 'भारवेरर्थगौरवम्' इस उक्ति के अनुसार किरातार्जुनीय का अर्थगौरव अतीव प्रसिद्ध है।

पाठगत प्रश्न-2.3

22. भारवि का देश कौन सा है?

23. भारवि के काव्य का नाम क्या है?

24. भारवि का काल क्या है?

25. किरात कौन थे?

26. किरातार्जुनीय में कितने सर्ग हैं?

पाठसार

इस पाठ में कालिदास, अश्वघोष और भारवि के देश काल एवं कृतियाँ का वर्णन है। कालिदास का गौरव भी वर्णित है। कवियों के देशकाल के विषय में मतभेद भी प्रदर्शित किये हैं। कवियों के पाण्डित्य, भाषा शैली के विषय में भी वर्णन किया है। इससे ज्ञात हुआ कि कालिदास का देश उज्जयिनी है। अश्वघोष का देश कनिष्क की राजधानी था। अश्वघोष का समय ई-पूं- प्रथम शताब्दी है। अश्वघोष के विवाद रहित दो काव्य है। बुद्धचरितम एवं सौन्दरनन्द। भारवि का काल 6वीं व 7वीं शताब्दी है। भारवि दक्षिण भारत के थे यह ज्ञात होता है। भारवि का एक ही महाकाव्य किरातार्जुनीयम् है।।

आपने क्या सीखा

- कवियों के देशकालादि के विषय में जानकारी।
- कवियों के ग्रन्थों को जाना।
- प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों के बारे में जाना।
- काव्य शैलली तथा काव्य के महत्त्व को जाना।

पाठान्तप्रश्न

1. कालिदास की कृतियों का परिचय दीजिए।
2. कालिदास की भाषा शैली को लिखिए।
3. किरातार्जुनीयम् के आधार पर निबन्ध लिखिए।
4. अश्वघोष के देशकाल के विषय में टिप्पणी कीजिए।
5. अश्वघोष की कृतियों के बारे में परिचय दीजिए।
6. भारवि के देशकाल के विषय में लघु निबन्ध लिखिए।
7. भारवि का पाण्डित्य प्रस्तुत कीजिए।
8. कालिदास की भाषा शैली के विषय में निबन्ध लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. कालिदास के दो काव्य हैं।
2. कालिदास का काल ई.पू. प्रथम द्वितीय शताब्दी है।
3. कालिदास के तीन नाटक है।
4. कालिदास उपमा अलंकार के प्रयोग में शूरवीर थे।
5. रघुवंश में 19 सर्ग हैं।
6. रघुवंश में सूर्यवंशीय राजाओं का वर्णन है
7. कुमारसंभव में 17 सर्ग हैं।
8. कुमारसंभव में कुमार कार्तिक है।

9. कुमारसंभव में नायक कार्तिक है।

10. कालिदास का देश उज्जयिनी है।

2.2

11. अश्वघोष सम्राट कनिष्क के सभा में थे।

12. अश्वघोष के दो काव्य हैं।

13. अश्वघोष का एक नाटक शारिपुत्रप्रकरण है।

14. अश्वघोष का काल ई- प्रथम शतक है।

15. बौद्धचरित में 17 सर्ग हैं।

16. बुद्धचरित का नायक गौतम बुद्ध है।

17. बुद्ध के पिता का नाम शुद्धोधन है।

18. सौन्दरनन्द अश्वघोष की कृति है।

19. सौन्दरनन्द में 18 सर्ग हैं।

20. वज्रसूची अश्वघोष की कृति है।

21. शारिपुत्रप्रकरण अश्वघोष की रचना है।

2.3

22. भारवि का देश कांचीपुरम् है।

23. भारवि का काव्य किरातार्जुनीयम् है।

24. भारवि का काल छठी शताब्दी था।

25. किरात भगवान शिव हैं।

26. किरातार्जुनीयम् में 18 सर्ग हैं।